गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2018-2020

सेवा में,

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com
9406744064

मासिक
गोलालारीय दर्शन
सफलता के 10 वर्ष
लेट पोस्टिंग
अपनों के साथ अपनी बातें

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 10 अंक : 3 पृष्ठ संख्या : 8 माह – 15 जनवरी 2019 सहयोग राशी 1100/– देकर सदस्य बनें ।

रक्षाबंधन पर भाई को याद कर लिया करें – आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज

खुरई । नगर में मंगलधाम परिसर में उत्साह का माहौल था अवसर था आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज एवं गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी का ससंघ समागम 42 वर्षों के बाद हुआ । आर्यिकाश्री ने आचार्यश्री से आशीर्वाद लिया । संघ के आर्यिकाओं ने 12 वर्षों के संयोग के बारे में बताया । शरदपूर्णिमा के दिन सन् 1934 को आर्यिकाश्री ज्ञानमति माताजी का जन्म हुआ था । शरदपूर्णिमा के ही दिन सन् 1946 में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का जन्म हुआ । आर्यिकाश्री ने 1956 में आर्यिका दीक्षा ली, आचार्यश्री ने 1968 में मुनि दीक्षा ली । इनमें 12 वर्षों का ही अंतर है । दोनों को भगवान ऋषभदेव के पुत्र एवं पुत्री की उपमा दी गई । भाई बहिन के मिलन को पावन अवसर बताया गया । देश में आपातकाल के समय आचार्यश्री बुंदेलखंड आ गए और आर्यिकाश्री हस्तिनापुर क्षेत्र में पहुंच गई । आर्यिकाश्री ज्ञानमति माताजी आचार्य देशभूषण जी महाराज के समय की मांगीतुंगी में स्थापित विशाल प्रतिमा का पंचकल्याणक कराकर लौट रही थी, वह आचार्यश्री शिवसागरजी द्वारा स्थापित अयोध्या की प्रतिमा के दर्शन करने जा रही हैं । दोनों संघ आपस में समागम के लिए आतुर थे, मिलन के समय सभी के अधरो पर मुस्कुराहट थी । भावनाएं मन में हिलोरे ले रही थी ।

एक ही संघ के हैं दोनो साधु – 20वीं शताब्दी के आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज ने जैन साधु परंपरा को अक्षुण्ण रखा । उनके शिष्य आचार्यश्री वीरसागरजी महाराज हुए । जिनसे आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी ने दीक्षा ली । मुनिश्री शिवसागरजी दीक्षित हुए, बाद में वह आचार्य हो गये । उनसे मुनिश्री ज्ञानसागरजी महाराज ने दीक्षा ली । मुनिश्री ज्ञानसागरजी महाराज, आर्यिकाश्री ज्ञानमति माताजी एक ही संघ में रहे । बाद में आचार्यश्री ज्ञानसागर महाराज हुए, उनसे दीक्षा मुनिश्री विद्यासागर महाराज ने ली । बाद में वह आचार्य हो गए । अब वह बुंदेलखंड के आचार्य हैं । पहले संघ के चातुर्मास उत्तरप्रदेश, राजस्थान में ही हुए । पंचमकाल में भी विरासत में भगवान ऋषभदेव की छत्रछाया मिली ।

आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी ने कहा कि हम और आप सभी भाग्यशाली हैं । हमें पंचमकाल में भी भगवान ऋषभदेव की छत्रछाया और भगवान महावीर का जिनशासन मिला । कई जन्मों के पुण्य के फलस्वरुप जैन कुल में जन्म हुआ, णमोकार जपने का अवसर मिला । बपचन से ही संस्कार आए । तब मन में वैराग्य आया, आर्यिका दीक्षा मिली । उन्होंने पुराने दिनों के प्रसंग को याद करते हुए कहा कि 1959 में आचार्यश्री शिवसागर महाराज के साथ मुनिश्री ज्ञानसागर महाराज थे, हम आर्यिकाएं भी साथ में ही थे । तीन साल संघ के साथ में रहे। अजमेर में पहला चातुर्मास हुआ, सुजानपुर, सीकर में चातुर्मास हुए । सभा में जब एक श्लोक का अनुवाद करना था तो संस्कृत के प्रकांड विद्वान मुनिश्री ज्ञानसागर महाराज से अनुवाद कराया गया । श्लोक में यह बताया गया कि औचित्य गुण सबसे महत्वपूर्ण है । सारे गुणों को तराजू के एक पलवे पर रख दो और दूसरी तरफ औचित्य गुण रखो । अगर सारे गुणों में औचित्य गुण अलग कर दिया जाए तो अन्य गुण शून्य हो जायेंगे । औचित्य का तात्पर्य कर्त्तव्य से है, आचार्य, मुनि, आर्यिका, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, श्रावक का क्या कर्त्तव्य है यह सभी को ध्यान रखना जरुरी है ।

आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि आप और मैं भाई बहन हैं, आपने भाई की सुध नहीं ली । हंसी करते हुए कहा कि पूछ तो लेते भाई कैसा है । रक्षाबंधन पर राखी तो अब बंधती नहीं, परंतु रक्षाबंधन का त्योहार तो मना सकते हैं, उस दिन ही भाई को याद कर लो । देश का आपातकाल मेरे लिए चतुर्थ काल बन गया, आगरा से दिल्ली जाते समय मैं मार्ग बदलकर बुंदेलखंड की ओर आ गया । यहां आकर देखा तो पाया कि यहां चैतन्य रत्नों की खान है । संघ में इतने चैतन्य रत्न मिले कि संघ बड़ा हो गया । अभी भी चैतन्य रत्न मिलते जो रहे हैं, यह खदान है । उन्होंने आर्यिकाश्री से कहा कि आप हस्तिनापुर को छोड़कर यहां आ जाएं, बुंदेलखंड को ही हस्तिनापुर बना दें । आचार्यश्री ने प्रसंगों को याद किया और हंसी के बीच गहरी बातें की, श्रद्धालु हंसते रहे, तालियां बजती रही । आचार्यश्री ने कहा कि कबड्डी का खेल अच्छा है लेकिन श्वांस दृढ़ होना चाहिए । जिसने श्वांस पर नियंत्रण कर लिया वह खेल जीत गया । इसी तरह मन पर नियंत्रण रखना जरुरी है ।

दादाजी के जन्मदिन पर पोते ने दिया वर्ल्ड रिकार्ड का उपहार

नये साल की सुबह मास्टर इशत ने नये प्रण व विश्वास के साथ ड्रम बजाना शुरु किया । वे अपने गुरु व परिजनों का आशीर्वाद लेकर नये साल में कुछ नया करने के इरादे से मंच पर आये और लगातार 12 घंटे तक ड्रम बजाकर गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना नाम दर्ज कराने में कामयाब रहे । 14 साल के ड्रमर इशत कक्षा 9वीं के छात्र है । वे पिछले तीन वर्षों से अपने गुरु बबलू शर्मा के मार्गदर्शन में संगीत के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने के लिए तैयारी कर रहे थे । उनकी ऐसी इच्छा है कि कुछ ऐसा किया जाये जिससे परिवार के साथ इन्दौर का नाम भी रोशन हो।

1 जनवरी को उनके लिए बड़ा ही अनोखा संयोग रहा । आज ही इशत के दादाजी श्री रमेशचंदजी जैन का 72वां जन्मदिन उल्लासपूर्वक मनाया गया । श्री रमेशचन्द्रजी गोलालारीय समाज इन्दौर के वरिष्ठ आजीवन स्थायी ट्रस्टी है । आप हमारी समाज के वे शख्स है जो खामोश रहकर अपने समाज की उन्नति के लिए हर संभव योगदान करते रहते है । समाज के लिए बहुउद्देशीय मांगलिक परिसर बनाने हेतु 1 एकड़ जमीन आपके सहयोग से प्राप्त हुई । वर्तमान में लार्ड आदिनाथ टाउनशिप में समाज के नये मंदिर हेतु भूमि चयन में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है । मा. इशत ने अपना गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड अपने दादाजी को जन्मदिन के अवसर पर सप्रेम समर्पित किया । मा. इशत श्री रमेशचन्द्रजी–प्रभा जैन के पौत्र व प्रियंक–शालिनी जैन के सुपुत्र है । प्रियंक जैन वीर बाहुबली ग्रुप के अध्यक्ष भी है । श्री प्रियंक जैन ने बताया कि वर्ल्ड रिकार्ड के नियमानुसार हर तीन घंटे में 12 मिनिट का ब्रेक वादक ले सकता है । इस अवधि में इशत के खान पान का ध्यान रखते हुए उन्हें फल व ज्यूस दिये गये जिससे उनमें अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन देने के लिए सतत उर्जा मिलती रहे । गुरु बबलू शर्मा ने अपनी टीम के गायकों के साथ सुमधुर प्रस्तुतियां पेश कर 12 घंटे तक उपस्थित श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया । कुछ विशेष गानों पर मा. इशत ने अपना विशेष प्रदर्शन कर सभी का मन मोह लिया ।

गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड के लिए मा. इशत ने आधे घंटे से रियाज़ प्रारंभ कर 8 घंटे प्रतिदिन तक ड्रम बजाया । रियाज़ में स्लो और फास्ट बीट का समावेश कर अपने को तरोताज़ा रखने का अभ्यास मंच पर प्रस्तुति के समय उनके लिए काफी उपयोगी रहा । मा. इशत की शानदार प्रस्तुति के समय उनके परिवारजनों के साथ समाज के अनेको सदस्यों ने पहुंचकर उनका उत्साह बढ़ाया । वीर बाहुबली ग्रुप के सदस्यों ने कार्यक्रम स्थल पर बहुत ही सुंदर व्यवस्था बनाकर अतिथियों का मन मोह लिया ।

देवगढ़ में निर्मित होगी आचार्यश्री विद्यासागर संतशाला

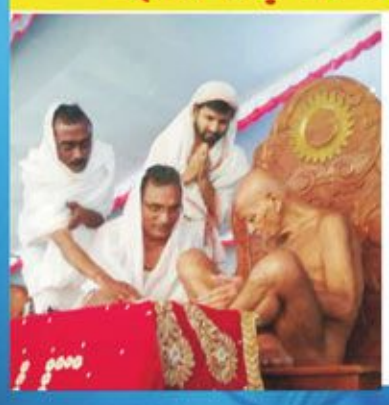

देवगढ़ में आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के कदम पढ़ते ही देवगढ़ मैनेजिंग कमेटी व स्थानीय श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से आरती कर अगवानी की । सुबह की बेला में गुरुवर ने पूरे देवगढ़ के देवों की वंदना की और कहा कि निश्चित यह क्षेत्र मूर्ति निर्वाण का बड़ा केन्द्र रहा होगा । देवदर्शन के बाद आचार्यश्री के सानिध्य में शांतिधारा, अभिषेक की क्रियाएं संपन्न हुई जिसका पुण्यार्जन अशोक शिवाजी, देवेन्द्र अजमेरा गया, अरविंद सुमत बम्होरी, अमित जैन देहली, आशीष मोहनी, वीरेन्द्र नरेन्द्र कड़की, सनत कुमार, अतुल कुमार घी, अखलेश, अंकित, अंकुर, हरेन्द्र जैन उड़ीसा, वीरेन्द्र आगरा, अक्षय सिंघई विरधा को मिला । जिसके पश्चात पाद प्रक्षालन का सौभाग्य देवगढ़ कमेटी अध्यक्ष सेठ प्रदीपकुमार प्रसन्नकुमार प्रतीक कुमार देवेन्द्रकुमार राजकुमार सुनील कुमार रोचक कुमार रोमेश कुमार नौहरकलां परिवार व नरेन्द्र जैन रायपुर, मेघ विजय जैन मुंबई को मिला । इस अवसर पर सभी ने पूज्य गुरुदेव के समक्ष पीले पत्थर की एक संत शाला बनाने को आशीर्वाद लिया । पाद प्रक्षाल का पुण्यार्जन अशोक कुमार अर्पित जैन शिवाजी को मिला । दोपहर की बेला में संतशाला का शिलान्यास हुआ । जिसमें आचार्य कक्ष का पुण्यार्जन कमेटी कोषाध्यक्ष कमलेश सराफ, वरुण कुमार नीतेश कुमार सराफ परिवार ने किया व राकेश कुमार रोचक कुमार नौहरकलां देवेन्द्र कुमार सुनील कुमार राजकुमार नौहरकलां व हेमंत कुमार आलोक कुमार पवन कुमार झांसी व प्रदीप कुमार अशोक कुमार राजकुमार अनोरा व राजकुमार आनंद कुमार अरविंद कुमार अंकुर कुम्हेडी व नरेन्द्र जैन रायपुर व मेघ विजय जैन मुंबई ने एक एक कक्ष का पुण्यार्जन किया ।